वैशाली

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

लिच्छवि गणराज्य की प्राचीन राजधानी वैशाली की पहचान वैशाली जिले के वसाढ गांव से की गई है| इसकी स्थिति जिला मुख्यालय हाजीपुर से 29 किलोमीटर उत्तर एवं मुजफ्फरपुर से 35 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम है|

वैशाली नगर का अत्यंत गौरवशाली अतीत रहा है| विष्णु पुराण के अनुसार तृणविन्दु के पुत्र विशाल ने विशालपूरी की स्थापना की थी| रामायण में उल्लेख है कि विश्वामित्र के साथ जनकपुर जाते समय राम ने इस नगर को देखा था| उस समय राजा सुमति यहाँ के शासक थे| बौद्ध एवं जैन साहित्य में वैशाली की चर्चा एक वैभवशाली नगरी के रूप में की गई है| जैन ग्रंथों में वैशाली के कुंडग्राम को तीर्थंकर महावीर का

जन्म स्थान बताया गया है| उनकी माता का नाम त्रिशला था| पिता सिद्धार्थ वैशाली गणराज्य के एक राजा थे|

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग ने वैशाली की यात्रा की थी| उन्होंने यहाँ के स्मारकों एवं स्तूपों की चर्चा की है| फाह्यान ने वैशाली के उत्तर एक महावन का उल्लेख किया है| ह्वेनसांग ने कुछ विस्तार से वैशाली के भग्नावशेषों का उल्लेख किया है| उसने बताया है कि नगर के उत्तर पश्चिम हीनयानियों का एक संघाराम था| बुद्ध के वैशाली प्रवास एवं उनके उपदेश स्थलों पर बने स्तूपों का वर्णन भी उसने किया है| बुद्ध के अस्थि अवशेष का एक भाग लिच्छवियों को भी मिला था| ह्वेनसांग ने उस स्तूप का भी उल्लेख अपने यात्रा विवरण में किया है|

प्राचीन साहित्य एवं चीनी यात्रियों के यात्रा वृतांतों में उल्लिखित वैशाली की स्थिति के संबंध में पुराविदों में एक मत नहीं था| सर्वप्रथम कनिंघम ने इस स्थल के महत्व को समझा था| कनिंघम एवं वेगलर ने चीनी यात्रियों द्वारा उल्लेखित कुछ स्थलों की पहचान भी की थी, परंतु इस स्थल का नियमित उत्खनन ब्लॉक की देखरेख में 1903-04 ई० में प्रारंभ हुआ| "राजा विशाल का गढ़" नाम से प्रसिद्ध स्थल पर ब्लॉक द्वारा किए गए उत्खनन के फलस्वरूप कुछ ईट निर्मित भवनों के अवशेष मिले जो गुप्तकालीन थे| इसमें उपयोग की गई ईटों की माप 41.25x25x5 सेंटीमीटर थी| कुछ उत्खनन खातों से बहुतायत में गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में अभिलिखित मृण्मय मुहरे मिलीं|

1912-13 ई० में स्पूनर ने यहाँ उत्खनन कराया| उनका उद्देश्य वैशाली को लिच्छवियों की राजधानी प्रमाणित करने वाले तथ्यों की खोज करना था| हालाँकि इस कार्य में उनको सफलता नहीं मिल सकी| 4.5 मीटर की गहराई पर पानी निकल आने पर उसके निचे उत्खनन करना सम्भव नहीं रहा| इस उत्खनन में भारी मात्र में मुहरें और मुद्रिकाए मिलीं| मौर्य-शुंग कालीन सामग्री भी मिली|

वैशाली संघ के तत्वाधान में कृष्णदेव की देख रेख में इसका उत्खनन पुनः प्रारंभ हुआ| इस उत्खनन का उद्देश्य वैशाली की सुरक्षा व्यवस्था का पता लगाना था| इस उत्खनन से सुरक्षा प्रकार के दो विभिन्न चरणों का पता चला| प्रारंभिक चरण का सुरक्षा प्रकार 5 मीटर चौड़ा था| मिट्टी से बने इस प्रकार का काल 600-500 ई० पू० निर्धारित किया गया| इसके बाद ईटों से बने एक अन्य विशालकाय प्रकार का पता चला| जिसकी चौड़ाई आधार में 20.5 मीटर एवं ऊपर 6.30 मीटर तथा ऊँचाई 4 मीटर थी| इसका निर्माण शुंग काल में किया गया था|

1958 ई० में वैशाली का पुनः विस्तार से उत्खनन प्रारम्भ हुआ| डॉ० ए० एस० अल्टेकर एवं एस० आर० राय की देख-रेख में उत्खनन कार्य 1962 तक चला| इस उत्खनन में चीनी यात्रियों द्वारा उल्लेखित अनेक स्थलों की प्रमाणिकता सिद्ध हुई, जिसमे अस्थि स्तूप, अभिषेक पुष्करिणी आदि प्रमुख है|

आधुनिक उत्खननों में वैशाली से कई महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए है| वैशाली के विभिन्न क्षेत्रों में हुए उत्खननों के आधार पर इसके पांच सांस्कृतिक कालों का पता लगाया गया है| प्रथम सांस्कृतिक काल में उत्तरी परिमार्जित कृष्ण मृदभांड (NBPW) अनुपस्थित है| इस काल में कृष्ण-लोहित, लोहित, कृष्ण एवं धूसर मृदभांड बहुतायत से मिलते है| वी० पी० सिन्हा के अनुसार इसकी तिथि 700-600 ई० पू० निर्धारित की जा सकती है|

द्वितीय काल से कृष्ण, लोहित और कृष्ण-लोहित के साथ उत्तरी परिमार्जित कृष्ण मृदभांड भी मिलने प्रारंभ हो जाते है| इसे 600 ई० पू० में रखा जा सकता है| तृतीय काल में उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभांड परम्परा समाप्त हो जाती है| इसका काल निर्धारण 150 ई० पू० से 300 ई० तक किया गया है| चतुर्थ काल से गुप्तकाल प्रारंभ होता है| इस काल से मिले पुरावशेषों की बनावट उसकी लिपि एवं अन्य विशेषताओं के आधार पर इन्हें प्रमाणिक रूप से गुप्त काल में रखा जा सकता है| इसका समय 300 ई० से 600 ई० हैं| पांचवे में 600 ई० से प्रारंभ होकर मुस्लिम काल के प्रारंभ तक के पुरावशेष रखे जा सकते है|